International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 23-27

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में नारी जीवन का चित्रण

[1] कल्पना अभिषेक पाठक, [2] डॉ0 हरिणी रानी आगर

[1]शोधार्थी–डॉ. सी. वी. रामन वि.वि., सहा. प्राध्या. हिन्दी, शास. महाविद्यालय कोतरी, जिला–मुंगेली (छ.ग)
[2]सहा. प्राध्या. हिन्दी, शास. बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग)

प्रस्तावना

कालजयी रचनाकारों की यह विशेषता होती है कि वे किसी युग या प्रवृत्ति के बंधन में बंधकर तत्कालीन सुख व प्रसिद्धि देने वाली ही रचना नहीं करते अपितु उनकी रचना सभी वादों, प्रवृत्तियों से परे दीर्घकाल तक मनुष्य की चेतना का पथ प्रदर्शित करती है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और धर्मवीर भारती जी के रचनाओं के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि उनकी रचनाओं की विषय–वस्तु तत्कालीन होते हुए भी वर्तमान में प्रासंगिक है।

निराला व भारती जी ने नारी जीवन का गहराई में जाकर चित्रण किया है। इनकी रचनाओं में नारी की जो स्थिति दिखाई गई है वह आज भी कई मायनों में प्रासंगिक लगती है। स्त्री व पुरूष दोनों ही समाज के दो समान पहिए के समान हैं, इनमें से किसी एक का भी पिछड़ना समाज के विकास को प्रभावित करता है। प्राचीन काल से ही पितृसत्तात्मक समाज कभी नियम, कभी परंपरा, कभी अहं की तुष्टी तो कभी शोषण के माध्यम से नारी जीवन को पराधीनता की बेड़ी में जकड़ने का प्रयास करता आ रहा है। निराला व भारती जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के इस कटु सत्य का उद्घाटन करते हुए अपनी रचनाओं में नारी मुक्ति का स्वर मुखरित किया है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं धर्मवीर भारती जी ने अपने गद्य साहित्य में भारतीय नारी की दशा का वास्तविक चित्रण किया है। इनकी रचनाओं में समाज के लगभाग सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी का चित्रण मिलता है। इनकी रचनाओं में नारी जीवन की समस्याएँ, संघर्ष, दासता, उत्पीड़न, उपेक्षा तथा समाज के उनकी स्थिति का यथार्थ चित्रण मिलता है। इसके साथ ही दोनों रचनाकारों ने नारी मुक्ति का स्वर भी मुखरित किया है।

नारी दासता व अत्याचार का चित्रण

निराला व भारती जी की रचनाओं में नारी पर उसके परिवार व समाज द्वारा किए जाने वाले अत्याचार व उत्पीडन का चित्रण मिलता है। इन अत्याचारों से नारी को पराधीनता की बेडियों में बाँधकर समाज की मुख्य धारा से पृथक कर दिया जाता है। इससे उत्पन्न विषम स्थिति का चित्रण निराला व भारती जी की रचनाओ में किया गया है।

भारती जी के उपन्यास 'सूरज का सातवा घोड़ा' (काले बेंट का चाकू) में स्त्रियों पर किए जाने वाले अत्याचारों का वर्णन है। इस उपन्यास में 'सत्ती' एक अनाथ बालिका थी जिसे उसके मुँहबोले चाचा चमन ठाकुर ने पाला था। पर बाद में महेसर दलाल उस पर बुरी नियत रखने लगा। सत्ती के साथ उसके मुँहबोले चाचा व महेसर दलाल द्वारा किया गया शोषण व अत्याचार बताता है कि समाज अनाथ लड़की के प्रति कितना संवेदनहीन है।

भारती जी की कहानी 'एक बच्ची की कीमत' में नारी पर किए जाने वाले शोषण का चित्रण मिलता है। इस कहानी में पंजाबी और बनिया भूख से लाचार माँ व बेटी की मजबूरी का फायदा उठाने में कोई कसर नहीं छोडते। पंजाबी चंद सिक्कों में उसकी बेटी का सौदा करता है तो बनिया महिला को धोखा देकर उसके सिक्के के बदले में अपना खोटा सिक्का थमाकर उसे अनाज देने से मना कर देता है। इस कहानी को पढ़कर पाठक के मन में समाज के ऐसे सभ्य कहे जाने वाले लोगों के प्रति घृणा की भावना व्याप्त हो जाती है।

निराला जी की कहानी 'हिरणी' में रानी साहिबा द्वारा अकाल पीड़ित बालिका हिरणी की देख–रेख के नाम पर किए जाने वाले शोषण का चित्रण है। उस नन्हीं बालिका के साथ दासियों जैसा किए जाने वाले व्यवहार का चित्रण करते हुए लेखक लिखते हैं कि–''आठ साल की लड़की रानी साहिबा की दासियों से स्नेह तथा निरादर प्राप्त करती हुई, उन्हीं में रहकर उन्हीं के संस्कारों में ढलती हुई धीरे–धीरे परिणत हो चली। वहाँ जो धर्म दासियों का, जो भगवान रानियों से सेविकाओं तक के थे, वही उसके भी हो गये।''[1] जब हिरणी बड़ी हुई तब रानी साहिबा ने बिना उसकी मर्ज़ी जाने उसका विवाह करवा दिया। वह एक बच्ची की माँ बन गयी। एक दिन जब वह अपनी बच्ची की बीमारी की वजह से रानी साहिबा की सेवा में न पहुँच सकी तो अन्य दासियों के द्वारा भड़काए जाने पर रानी ने उसे एक नौकर से पकड़ लाने का आदेश दिया। जब वह नौकर हिरणी के घर गया तो वह अपनी बच्ची को दवा पिला रही थी, पर नौकर इसकी परवाह न करते हुए रानी की आज्ञानुसार उसे घसीटता हुआ ले आया।

निराला जी की कहानी 'देवी' में एक पागल युवती के साथ किए गए शोषण का चित्रण करते हुए लेखक लिखते हैं कि– ''यह पगली भी क्या अपने बच्चे की तरह रास्ते पर पली है ? सम्भव है, पहले सिर्फ गूँगी रही हो, विवाह के बाद निकाल दी गयी हो, या खुद तकलीफ पाने पर निकल आयी हो, और यह बच्चा रास्ते के किसी ख्वाहिशमंद का सबूत हो।''[2] समाज के मनचले युवक की बर्बरता एवं अमानवीयता का दंश एक बेसहारा विक्षिप्त महिला को झेलना पड़ता है।

निराला जी के उपन्यास 'चोटी की पकड़' में समाज में विधवा नारी पर किए गए अत्याचार का चित्रण है। इस उपन्यास में पच्चीस वर्ष की विधवा स्त्री (बुआ) के साथ किसी युवक ने हमला किया। बात न मानने के कारण उस बलात्कारी युवक ने बुआ के चेहरे को विकृत कर दिया। समाज में नारी के साथ हो रहे ऐसे शोषण व अत्याचार का उल्लेख करते हुए निराला जी लिखते हैं कि–''कोई बड़ा मालगुजार है। किसी कारण पटरी न बैठी, लड़ गया। ताका जाने लगा। शाम को उसकी लड़की तालाब के लिए निकली। अँधेरे में पकड़कर खेत में ले जाई गई या दूसरे मददगार के खाली कमरे में कैद कर रखी गई। दूसरे–दूसरे आदमी दाढ़ी लगाकर या मूँछें मुड़वाकर चढ़ा दिए गए–ज्यादातर मुसलमानी चेहरे से। उन्होंने कुकर्म किया। उसके फोटो लिए गए। तीन–चार रोज बाद लड़की घर के पास छोड़ दी गई। एक फोटो आदमी के गाँव में, दूसरी थाने में डाक से भिजवा दी गई। नाम अंटशंट लिख दिए गए–चढ़नेवालों के; लड़की के बाप का सही नाम।''[3] इस प्रकार समाज में सत्ता व शक्ति के मद में लोग आपसी वैमनस्य के लिए

महिलाओं का शोषण करते हैं।
निराला जी के उपन्यास 'काले कारनामे' में सत्ताधारी लोगों के द्वारा असहायों पर किए गए शोषण व नारी की अस्मिता के साथ होने वाले अत्याचार का वर्णन है। इस उपन्यास में सिपाही ने इन्द्रमन लोध की बहन की अस्मत बिगाड़ी पर रोटी पड़ने के डर से इन्द्रमन ने यह बात किसी से नहीं कही। यह कहानी समाज के शक्तिशाली लोगों द्वारा महिलाओं के साथ किए जाने वाले अन्याय को उजागर करती है।
भारती जी की कहानी 'गुलकी बन्नों' में नारी की दयनीयता का चित्रण है। इस कहानी में गुलकी का पति उसे घर से निकाल देता है पर जब उसकी दूसरी औरत का बच्चा होता है तो वह गुलकी को सेवा करवाने के लिए लेने आता है। वह बुआ से कहता है–''इसे ले तो जा रहे हैं, पर इतना कह देते हैं, आप भी समझा दें उसे – कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की न पूत की, हमारे कौन काम की; पर हाँ औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू–बुहारू करे तो दो रोटी खाए पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ाई तो ख़ैर नहीं। हमार हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, अगली बार परान निकलेगा।''[4] इस कहानी में पति के द्वारा पत्नी पर किए गए अत्याचार का वर्णन है।
निराला जी के रेखाचित्र 'कुल्लीभाट' में तत्कालीन समाज में विधवा नारी के चरित्र के संबंध में जो विचारधारा थी उस संबंध में कुल्ली निराला से कहता है कि– ''विधवाएँ तो तरह–तरह के व्याभिचार करती हैं।''[5] उसके इस कथन से समाज में विधवा नारी की दशा का आभास होता है। इस रेखाचित्र में नारी के लिए बनाए गए पर्दा प्रथा का उल्लेख मिलता है। निराला जी की सलहज उनके सामने घूँघट डाले रहती थी। इस संबंध में जब निराला जी ने उनसे पूछा तो उसने बताया कि घूँघट डालने की उसकी इच्छा नहीं है पर यहाँ का समाज और लोग ऐसे हैं कि कुछ–का–कुछ सोच लेते हैं। इस पर निराला जी ने कहा कि– ''तो अपनी आँखें ढँककर दूसरों की आँखों पर पर्दा डालना चाहती हो !''[6] इस संवाद से नारी पर्दा प्रथा और उस संबंध में निराला जी के भाव प्रकट होते हैं। वे इस संबंध में प्रगतिशील विचारधारा वाले थे।
निराला जी की कहानी 'ज्योतिर्मयी' में विधवा नारी के जीवन की विडंबना का चित्रण है। इस कहानी की नायिका 'ज्योतिर्मयी' सत्रह साल की ऐसी युवती है जो मात्र बारह वर्ष की थी तब से वैधव्य जीवन की त्रासदी झेलती आ रही है। वह नारी मुक्ति संबंधी विचार प्रकट करते हुए कहती है कि– ''चूँकि आप ही लोगों ने, आप ही के बनाए शास्त्रों ने, जो हमारे प्रतिकूल हैं, हमें जबरन गुलाम बना रक्खा है; कोई चारा भी तो नहीं..''[7] एक विधवा युवती के मुँह से निकली ये पंक्तियाँ नारी दासता को उजागर करती है।
पति–पत्नी दोनों ही जीवन के दो धूरी के समान होते हैं। किसी एक के वियोग से इनके जीवन का स्वरूप बदल जाता है। पर समाज में यह देखा जाता है विधवा स्त्री की दशा एक विधुर पुरूष की अपेक्षा अधिक दयनीय हो जाती है क्योंकि उन्हें केवल अपने जीवन साथी का वियोग ही नहीं अपितु परिवार व समाज की अवहेलना व अपमान भी सहन करना पड़ता है। निराला जी की कहानी 'सफलता' में भी यह अन्तर स्पष्ट नज़र आता है। इस कहानी में आभा और नरेन्द्र दोनों ही अपने जीवन साथी के वियोग का कष्ट सह रहे थे। आभा नरेन्द्र से अपने कष्टों को दूर करने का उपाय जानना चाहती थी। वह सोचती है कि–''वह भी तो उसी की तरह विधुर है–जानता है व्यर्थ स्नेह कितना दुखद, कितना कठोर है। होगा कि स्त्री न होने के कारण वह इतना दुख, इनता अपमान न पा रहा हो; पर स्त्री न होने के कारण कभी उसने कल्पना तो की होगी कि उसके न रहने पर उसकी स्त्री का क्या होगा।''[8] इस कहानी में लेखक ने विधवा नारी की व्यथा का वर्णन किया है।
निराला जी की कहानी 'सुकुल की बीवी'' में सुकुल की दूसरी पत्नी अपनी माँ के जीवन में आए विषमताओं का वर्णन करते हुए बताती है कि –''वाजपेयीजी को एक ब्याह से संतोष नहीं हुआ। दूसरी शादी की। तब मैं पेट में थी। बेहटा मेरा ननिहाल है। सिर्फ नानी थीं। ईश्वर इच्छा, उनका देहान्त हो गया.... घर में किसी तरह गुजर न हुई, तब, लोटा–थाली बेचकर, उस खर्च से माँ लखनऊ गयीं। घर में पैर रखते, ससुर और पति ने तेवर बदले। पति ने कहा, इसके हमल है, हमारा नहीं। ससुर ने कहा, बदचलन है, धरम बिगाड़ने आयी है, भली होती, तो चली न आती..... एक रात को पति ने बाँह पकड़कर निकाल दिया।''[9] इस कहानी में निराला जी ने पति, परिवार व समाज द्वारा नारी पर किए गए अत्याचार का वर्णन किया है।
निराला जी ने 'चमेली' उपन्यास में विधवा नारी के प्रति समाज के लोगों की मानसिकता का चित्रण किया है। इस उपन्यास में चमेली विधवा युवती है जिसके प्रति गाँव का ठाकुर कुदृष्टि रखता था। वह चमेली के पिता से कहता है कि–''तेरी वह जुवंटा बिटिया भी समझती है, देस के धिंगरों को बुलाने के लिए रख छोड़ा है उसे घर में ? भर्तार को तो चबा गयी ब्याह होते ही, इससे समझ में नहीं आया कि कैसी है ? बैठा क्यों नहीं दिया किसी के नीचे अब तक ?''[10] इन पंक्तियों में भारती जी ने एक विधवा नारी के प्रति समाज के रवैये को दर्शाया है।
निराला जी के उपन्यास 'अलका' में विधवा स्त्री की दीन–दशा पर विचार करते हुए लेखक लिखते हैं कि–''क्या विधवा जैसी दुखी विधाता की दूसरी भी सृष्टि होगी, जो सखियों में भी खुले प्राणों से बातचीत नहीं कर सकती, भोग सुखवाले संसार के बीच में रहकर भी भोग–सुख से जिसे चिरकाल तक दृष्टिहीन होकर रहना पड़ता है ?''[11] इस उपन्यास के माध्यम से निराला जी ने समाज में विधवा स्त्री की दयनीय दशा का चित्रण किया है। उन्हें संसार के सभी भोग विलास से दूर रहना पड़ता है।
भारती जी के उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में हम देखते हैं कि किस तरह कभी परम्परा तो कभी चारित्रिक संस्कारों के नाम पर स्त्रियों की स्वतंत्रता का हनन किया जाता है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने पम्मी के माध्यम से समाज में स्त्री के प्रति विचारों को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है कि– ''मैं शादी और तलाक के बाद इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि चौदह बरस से चौंतीस बरस तक लड़कियों को बहुत शासन में रखना चाहिए।''[12] वास्तव में ये विचार हमारी सामाजिक व्यवस्था की देन है जिसमें नारी को चारित्रिक संस्कारों के नाम पर बंधनों में बाँधा जाता है। इस उपन्यास की पात्र सुधा के अनुसार– ''हिन्दु नारी इतनी असहाय होती है, उसे पति से, पुत्र से, सभी से इतना लांछन, अपमान और तिरस्कार मिलता है कि पूजा–पाठ न हो तो पशु बन जाए।''[13] इस उपन्यास में बिनती नारी मुक्ति की आवाज़ प्रखर करते हुए कहती है–''आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान है, मुझे माँ बचपन से कुचलती रही, मैंने तुम्हे दीदी से भी बढ़कर माना। तुम भी ठोकरें लगाने से बाज नहीं आए, फिर भी मैं सब सहती गयी।––– अब मैं विरोध करना, विद्रोह करना भी सीख गयी हूँ। जिन्दगी में स्नेह की जगह है, लेकिन स्वाभिमान भी कोई चीज है।''[14] इस उपन्यास में विविध पात्रों के माध्यम से समाज का नारी के प्रति विचार तथा नारी की भावनाओं का चित्रण किया गया है।
भारती जी की कहानी 'शिंजनी' में राजपुरोहित नारी को अस्तित्वहीन मानते हुए कहते हैं–''नारी की अपनी कोई स्वतंत्र गति नहीं होती। तुम्हें किंजल्क की गति लेकर उसी के समानान्तर देवत्व की दिशा में उड़ना होगा।''[15] शिंजनी को अपनी मानवीय भावनाओं का त्याग कर युवराज किंजल्क की सेवा में नियुक्त किया जाता है। पर उसे यह भी आदेशित किया जाता है कि वह अपने और किंजल्क के बीच की दूरी को सदैव बनाए रखे। पर जब गंर्धव लोक के देवता किंजल्क वहाँ नियम के विरूद्ध शिंजनी के प्रति

अपनी काम भावना अभिव्यक्त कर देता है तो वहाँ की जनता इसका दोषारोपण शिंजनी पर करते हुए कहते हैं –''अपराध सदा नारी करती है। पुरूष तो अनजान है–निर्दोष है।''[16] भारती जी ने इस कहानी में नारी के संबंध में समाज की मनोवृत्ति को उजागर करने का प्रयास किया है। समाज का यह प्रचलन है कि पुरूष की गलती का दोषारोपण भी स्त्री पर ही किया जाता है।

नारी के प्रति उपेक्षा का भाव

नारी जीवन की समस्या केवल यह नहीं है कि उन पर शोषण ही किया जाए अपितु समाज में उनके प्रति उपेक्षा का भाव, उन्हें पुरूष के समान अधिकार न प्रदान करना तथा उनकी भूमिका को महत्वहीन समझना भी एक प्रमुख समस्या है। निराला व भारती जी ने समाज में नारी के प्रति किए गए उपेक्षित व्यवहार का भी चित्रण किया है।

भारती जी ने 'राम जी की चींटी : राम जी का शेर' नामक कैरीकेचर में अपने वैवाहिक अनुभव लिखते समय नारी के संबंध में लिखा है कि–''...यह जो भारतीय नारी नाम का जन्तु है इस पर डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त लागू ही नहीं होता। इसमें आदि काल, मध्य काल, आधुनिक काल होता ही नहीं, यह तो सदा से प्रागैतिहासिक काल में थी, प्रागैतिहासिक काल में है, प्रागैतिहासिक काल में रहेगी। ऊपर से यह भारतीय नारी ऊँची एड़ी की सैंडील पहन ले, नाइलन की साड़ियाँ पहन ले, तन के चले, ऊँचा जूड़ा बनाये, सर्राटे से मोटर चलाये, अँगरेजी में धोबी का हिसाब लिखे, पर अन्दर से यह हमारी वही पुरानी बचपन वाली ताई है–''राम जी की चींटी, राम जी की राग !''दरियादिली, वही दरियादिली..''[17] ये पंक्तियाँ नारी के संबंध में भारती जी के विचारों का उद्घाटन करती है।

भारती जी की कहानी 'बंद गली का आखिरी मकान में नारी संबंधी समाज की सोच को मुखरित किया गया है। इसाक मियाँ मुंशीजी से कहते हैं कि–''मुंशी ! अबे कब तक जनानखाने में घुसा रहेगा ! तबीयत ठीक कर।.....ज़रा मरद पठान से रूबरू बातें कर तो तेरा दिमाग़ ठीक हो, नही तो औरतों के बीच पड़ा औरतों की तरह कुजहिड़ाव करता है।''[18] नारी के संबंध में इसी तरह के विचार वकील साहब के भी थे। वह मुंशीजी से कहता है कि –''यह औरत ऐसी खाई है कि बड़े–बड़े ऋषि–मुनि भवसागर पार गये लेकिन इस खाई में गिरे तो बचे नहीं। फिर हम तुम तो इन्सान हैं।''[19] इन पात्रों के माध्यम से भारती जी ने पुरूषवादी समाज में नारी के प्रति हेय भावना का चित्रण किया है।

भारती जी की कहानी 'मंजिल' में नारी के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए बताया गया है कि उसके रूप सौन्दर्य के नशे में मनुष्य ईश्वर को भी भूल जाता है। इस कहानी में जब पुण्य ने पहली बार नारी को देखा तो उस स्थिति का वर्णन करते हुए भारती जी लिखते हैं कि –''फूलों से लदी हुई बसन्ती झाड़ियों के बीच में लाज से सकुची हुई नारी। पुरूष को एक नया साथी मिला। वह हँसती थी तो फूल झरते थे। पुरूष फूलों को भूल गया। उसकी आँखों में चाँदनी छटकती थी। वह चाँद को भूल गया। नारी की गति में ईश्वरत्व की शान थी। और पुरूष ईश्वर को भूल गया।''[20] इस कहानी में भारती जी ने नारी के सौन्दर्य को पुरूष के भटकाव का कारण बतलाया है।

भारती जी की कहानी 'कुबेर' में नारी की स्वर्ण के प्रति लालसा की भावना और उसके दुष्परिणाम की ओर प्रकाश डाला गया है। कुबेर पुरूष से कहता है–''मनुष्य ने प्रेम के सामने मेरी उपेक्षा की थी। उसकी असह्य उपेक्षा ने मुझे जड़ बना दिया था। आज मैं नारी का आश्रय लेकर मनुष्य से प्रतिशोध लूँगा।''[21] यह कहानी नारी की स्वर्ण के प्रति आर्कषण की भावना और उसके दुष्परिणाम को बतलाती है।

भारती जी की कहानी 'स्वप्नश्री और श्रीरेखा' में युवराज समुद्रगुप्त और श्रीरेखा के वार्तालाप में नारी संबंधी विचार दिखाई देते हैं। समुद्रगुप्त नारी को महत्वहीन समझते हैं। वे कहते हैं–''मैं नारी को इतना महत्व ही नहीं देता कि उसकी उपेक्षा करने का व्यर्थ कष्ट उठाऊँ।...मैं साम्राज्यों के भाग्यों से खेल सकता हूँ; नारी जैसे कच्चे खिलौने से मैं नहीं खेलता।''[22] जिसके प्रत्युत्तर में श्रीरेखा कहती है–''नारी जीवन में कच्ची हो किन्तु खेल या प्यार में कच्ची नहीं होती। जिस दिन वह खेलने अथवा प्यार करने का निश्चय करती है, उसी दिन उसमें अपूर्व प्रतिभा जाग जाती है।''[23] दोनों के विचार से पृथक स्वप्नश्री नारी के संबंध में कहती है कि–''नारी एक सूत्र है; गूढ़ सूत्र। जैसे एक सूत्र की व्याख्या से टीकाकार अधिकतर अपनी ही मनःस्थिति और विचारधारा के अनुसार टीका करता है; उसी प्रकार नारी की व्याख्या भी प्रत्येक पुरूष अपने अनुभव और अपनी विचारशक्ति के अनुसार करता है।''[24] इस कहानी में भारती जी ने नारी के विषय में पुरूष व नारी के विचार को प्रकट किया है। एक ओर समुद्रगुप्त नारी को महत्वहीन समझता है वहीं श्रीरेखा नारी को शक्ति व प्रतिभा से संपन्न मानती है। स्वप्नश्री नारी के संबंध में समाज के विचार व प्रतिक्रिया को व्यक्त करती है।

भारती जी की कहानी 'पूजा' में समाज में नारी की स्थिति का चित्रण मिलता है। पूजा नारी की स्थिति का चित्रण करते हुए कहती है–''देवताओं ने पुरूष को वाणी इसलिए दी है कि वह अपनी भावनाओं को प्रकट करे, और स्त्री को वाणी इसलिए दी है कि वह अपनी भावनाओं को साफ़–साफ़ छिपा जाए।''[25] स्त्री कभी अपनी भावनाओं और इच्छाओं को खुलकर अभिव्यक्त नहीं कर पातीं। उसे बाल्यावस्था से ही दूसरों के इच्छानुसार जीना पड़ता है। इस संबंध में पूजा कहती है–''पिता की इच्छा है मैं देवदासी बनूँ। और मेरी इच्छा–कितनी नाचीज़ मेरी इच्छा। मैं तो महज दूसरे की इच्छा पर चूर–चूर हो जाने के लिए बनी हूँ।''[26] इस कहानी में भारती जी ने नारी की असहाय दशा का किया चित्रण है जिसमें वह अपने ही जीवन का निर्णय स्वयं की इच्छानुसार नहीं कर पाती।

भारती जी की कहानी 'पूजा' में देवदासी परंपरा का चित्रण मिलता है। इस परंपरा में देवदासी को अपनी मानवीय इच्छाओं का त्याग कर ईश्वर में समर्पित हो जाना होता है। जब इस कहानी में पूजा को देवदासी बनाने का समय आया तब वह कहती है–''कल तक मैं कुमारी थी– अपना यौवन, अपना हृदय, अपना रूप किसी को भी समर्पित करने को स्वतंत्र। आज मैं देवदासी हूँ, मेरी सुकुमार प्यासी भावनाएँ, मेरी अछूती तरुणाई आज महज़ उसकी है, उस पत्थर के देवता की।''[27] इस कहानी में परंपरा के नाम पर स्त्रियों पर किए गए शोषण का चित्रण है।

नारी मुक्ति का स्वर

निराला जी ने 'काले कारनामे' उपन्यास में मनोहर की माँ के माध्यम से समाज में नारी मुक्ति का स्वर मुखरित किया है। इस उपन्यास में मनोहर की माँ अपने पुत्र से नारी की व्यथा बताते हुए कहती है कि–''हम एक मुद्दत से यह कसाले झेल रहे हैं। माँ से बेटे को बरासत में जो बातें मिलती हैं, वे हमारे कौम की गर्दन झुका देने वाली हैं। मुसलमानी जमाने से जो अपमान होते आये हैं, बेटे, अभी तू बच्चा है, मुझसे कहने लायक नहीं, सिर्फ तैयार होता जा कि माँ के सपूत का जवाब दे.....मजबूरी के सिवा मरदों के हाथों उनके और भी जो अपमान होते हैं वे सैकड़ों बिच्छुओं के डंक मारने से ज्यादा जलनवाले और जहरीले हैं। मरदों की आँखों के नीचे उनके अपमान हुए हैं और मरदों के हाथ –पैर नहीं चले।....यही कामना दिन–रात रहती है कि नारियों का अपमान है, हे भगवान्, बदला चुकाओ। सिर्फ बदले की आग धधकती है।''[28] इस उपन्यास में निराला जी ने मनोहर की माँ के विचारों के माध्यम से समाज में

नारी मुक्ति की ज्वाला भड़काने का प्रयास किया है।
निराला जी के उपन्यास 'अप्सरा' की नायिका अप्सरा नारी दासता का विरोध कर मुक्ति का समर्थन करती है। वह अपनी माँ से कहती है कि–''मैं कोई घूँघट काढ़नेवाली सुहागिन तो हूँ नहीं। कुछ पैदायशी स्वतंत्र हक मैं अपने साथ रखूँगी, नहीं तो कुछ दिक्कत पड़ सकती है।''[29] इन पंक्तियों में नारी मुक्ति की भावना दिखाई देती है।
निराला जी ने अपने उपन्यास 'प्रभावती' में समय व आवश्यकता के साथ नारी जीवन में आए बदलाव का वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि–''वाल्मीकी की सीता, कालिदास की शकुन्तला, श्री हर्ष की दमयन्ती पति गृह को अपनी दिव्य ज्योति से आलोकित कर रही थी; बल्कि बाहर से होने वाले आक्रमणों ने इन भारतीय महिलाओं, विशेषकर क्षत्रीय कुमारियों को आत्मरक्षा के लिए सजग कर एक–दूसरे ही भाव–रूप में बदल जाने को बाध्य कर दिया था। क्षत्रीय–वीरांगनाएँ अश्वारोहण और शस्त्र–प्रयोग में भी पटुत्व प्राप्त कर रहीं थीं।''[30] इन पंक्तियों के माध्यम से निराला जी ने यह बतलाने का प्रयास किया है कि आवश्यकतानुरूप नारियाँ स्वयं में परिवर्तन ला सकती हैं।
निराला जी के उपन्यास 'अलका' में नारी की बहादुरी बताते हुए अजित कहता है–''बहादुरी तो बहुत पहले से स्त्रियों को ही मिली हुई है। 'साहस षड्गुणंचैव', छगुनी हिम्मत स्त्रियों में पुरूषों से ज्यादा है, अवश्य 'लज्जाचापि चतुर्गुणा'–यह भी कहा गया है, पर हिम्मत में लाज से ड्योढ़ा बल ज्यादा है, इसलिए जब चाहें, स्त्रियाँ हिम्मत से लाज को दबा सकती हैं।''[31] यह उपन्यास नारी मुक्ति का समर्थन करती है। इस उपन्यास में अजित के शब्दों में निराला जी के नारी के प्रति उच्च विचार व सकारात्मक दृष्टिकोण का पता चलता है।
निराला जी के उपन्यास 'अलका' में स्त्रियों के सुहाग चिह्न संबंधी रूढ़ परंपरा का विरोध करते हुए सावित्री अलका से कहती है कि–''सुहाग प्राणों का विषय है, किसी चिह्न का धारण उसे धवल नहीं करता। दागे हुए साँड़ या कम्पनी–विशेष के घोड़ों की तरह किसी देवता या पुरूष के नाम चढ़ जाने की मुहर लगाकर फिरना स्त्रियों के लिए सम्मानजनक कदापि नहीं।''[32] ये पंक्तियाँ नारियों के लिए बनाए गए सुहाग चिह्न संबंधी रूढ़ परंपरा का विरोध कर नारी को रूढ़िवादी परंपरा से मुक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हैं।
भारती जी की कहानी 'पूजा' में राधिका के माध्यम से समाज में नारी की खोई हुई महत्ता को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस कहानी की नायिका कलाकार नक्षत्र से कहती है कि–''तुम अपने कृष्ण के युद्ध की गाथाएँ गाते हो। सुदुर ग्रामों से आने वाली आभीर कन्याएँ कृष्ण के प्रणय और रास गीत गाती हैं। उनसे पूछना है मुझे कि कौन–सी वह विशेष गोपी है जिसने अपनी एकान्त आराधना से शिशु गोपाल को भगवान बना दिया था। मगर अब तो कृष्ण भगवान बन ही गये। अब उस आराधिका से किसी को क्या मतलब! उसे भूलना ही ठीक समझा लोगों ने।..... अगर अभी तक तुम लोग देवता के जीवन में नारी का स्थान भूल रहे हो तो अब उसे स्थापित करो। तुम्हें अपने देवता के जीवन में उस अज्ञातनामा राधिका को स्थापित करना ही होगा।''[33] इन पंक्तियों के माध्यम से भारती जी ने पुरूष के जीवन में नारी की महत्ता को बतलाया है।
निराला जी की कहानी 'ज्योतिर्मयी' में कहानी का नायक विजय जब विधवा नारी के पुनर्विवाह न करने के संबंध में अपनी पुरूषसत्तात्मक समाज की विचारधारा अभिव्यक्त करते हुए कहता है कि पतिव्रता नारी जीवन भर तपस्या करने के बाद परलोक में अपने पति से मिलती है तो इसका प्रत्युत्तर देते हुए ज्योतिर्मयी कहती है कि–'' अच्छा बताइए तो, पहली ब्याही स्त्री इसी तरह स्वर्ग में अपने पूज्यपाद पति–देवता की प्रतीक्षा करती हो, और पतिदेव दूसरी, तीसरी, चौथी पत्नियों को मार–मारकर प्रतीक्षार्थ स्वर्ग भेजते रहें, तो खुद मरकर किसके पास पहुँचेंगे ?''[34] एक विधवा युवती के मुँह से निकली ये पंक्तियाँ नारी मुक्ति की चेतना प्रदान करती है।
निराला जी अपनी कहानी 'सफलता' में एक विधवा स्त्री के जीवन को नयी दिशा देने का मार्ग बतलाते हैं। इस कहानी में विधुर नरेन्द्र विधवा स्त्री आभा से कहता है कि–''मैं तुम्हें वही अधिकार लेने के लिए कहता हूँ, जो तुमसे छिन चुका है... जिस दुनिया ने तुम्हें छोटी, अधम, भाग्य से रहित कहा, क्या उसे तुम नहीं समझाना चाहती कि तुम बहुत बड़ी – बहुत बड़ी, भाग्य से भरी हुई हो।''[35] इन पंक्तियों में विधवा स्त्री को अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई है।
निराला के उपन्यास 'निरूपमा' में एक नारी के परिवर्तिनवादी भावना को चित्रित किया गया है। निरूपमा जमींदार की पुत्री थी। पर उसमें अहंकार की भावना नहीं थी। उसने सदैव अपने मामा व अपने मामा के बेटे (दादा) के आदेश का पालन किया। पर कुमार की माँ से मिलने के संबंध में वह विचार करती है कि –''मैं अगर मिलूँ भी तो क्या बुरा है? .....पहले तो पति को बुलाते भी किसी को लज्जा नहीं लगी–न रुक्मिणी को लगी, न संयोगिता को। वह मेरी कमजोरी थी।.....अपने लिए मैं जैसा उचित समझती हूँ, क्यों नहीं कर सकती ? मुझे उनसे मिलना चाहिए। दादा दादा हैं, बस। मैं उनका अहित तो चाहती नहीं, फिर उनके सामने मेरी आँखें क्यों झुकें ? अपने लिए मैं जैसा उचित समझती हूँ, क्यों नहीं कर सकती ?''[36] ये पंक्तियाँ एक स्त्री की स्वतंत्र भावना का परिचायक है। निराला जी ने इस उपन्यास के माध्यम से नारी मुक्ति की प्रेरणा प्रदान की है।

निष्कर्ष

निराला व भारती जी की रचनाओं में व्याप्त सामाजिक दशा का वास्तविक चित्रण पाठक के अंतर्मन को छू जाता है। दोनों रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में नारी की दशा का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया है। भारती जी की रचनाओं में जहाँ समाज में नारी के प्रति तुच्छता का भाव दिखाई देता है वहीं निराला जी की रचनाओं में नारी जीवन पर हो रहे अन्याय का चित्रण व मुक्ति की भावना दिखाई देती है।
इन दोनों रचनाकारों की रचनाओं में समाज की वास्तविकता भी दिखाई देती है और समाज को मार्गदर्शन भी मिलता है। दोनों रचनाकारों की गद्य रचनाओं में समाज में व्याप्त विविध शोषण व आत्याचार तथा इसके कुचक्र में फँसी जनता की दशा का चित्रण किया गया है। इनकी रचनाओं में नारी पर किए गए शोषण का चित्रण कर उनकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया गया है। निराला व भारती जी ने अपनी कहानियों व उपन्यासों में समाज में स्त्रियों पर किए जाने वाले विविध अन्याय व शोषण की स्थिति का चित्रण कर विरोध का स्वर प्रकट किया है। इनकी रचनाएँ बताती हैं कि किस तरह अन्याय एवं शोषण से दबी नारी अपना जीवन व्यतीत करती है जिससे समाज का रूप विकृत हो जाता है। समाज के विकास के लिए नारी जाति का विकसित होना आवश्यक है और यह तभी संभव है जब उन्हें दासता व शोषण से मुक्त किया जाए।

संदर्भ सूची

1. नवल नंदकिशोर (संपदक)–निराला रचनावली, खंड–4 (हिरणी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 326
2. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4 (देवी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 357

3. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी– चोटी की पकड़, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2010, पृ. 49
4. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (गुलकी बन्नों), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 235
5. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी–कुल्लीभाट, राजकमल प्रकाशन, 2007, पृ. 72
6. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी–कुल्लीभाट, राजकमल प्रकाशन, 2007, पृ. 89
7. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4 (ज्योतिर्मयी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 289
8. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4 (सफलता) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 373
9. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4 (सुकुल की बीवी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 397
10. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4 (चमेली) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 254
11. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी –अलका, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ. 112
12. भारती धर्मवीर– गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ. 62
13. भारती धर्मवीर– गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ. 229
14. भारती धर्मवीर– गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ. 188
15. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (शिंजनी), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 182
16. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (शिंजनी), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 189
17. भारती धर्मवीर –ठेले पर हिमालय (राम जी की चींटी : राम जी का शेर) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 98
18. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (बंद गली का आखिरी मकान), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 309
19. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (बंद गली का आखिरी मकान), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011,पृ. 315
20. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (मंज़िल), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011,पृ. 220
21. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (कुबेर), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 215
22. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (स्वप्नश्री और श्रीरेखा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011पृ., 170
23. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (स्वप्नश्री और श्रीरेखा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 170
24. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (स्वप्नश्री और श्रीरेखा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ. 171
25. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (पूजा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.151
26. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (पूजा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.159
27. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (पूजा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.161
28. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4 (काले कारनामें) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 217
29. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–3 (अप्सरा) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण, 2014,पृ.31
30. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी –प्रभावती, अलका, राजकमल प्रकाशन, 2007, पृ. 14–15
31. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी –अलका, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ. 148
32. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी –अलका, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ. 74
33. भारती धर्मवीर–धर्मवीर की संपूर्ण कहानियाँ (पूजा), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ.153
34. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4,(ज्योतिर्मयी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पाचवाँ संस्करण, 2014, पृ. 289
35. नवल नंदकिशोर (संपादक)–निराला रचनावली, खंड–4, (सफलता) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाचवाँ संस्करण,2014, पृ. 376
36. निराला सूर्यकांत त्रिपाठी– निरूपमा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2012, पृ. 87–88